Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

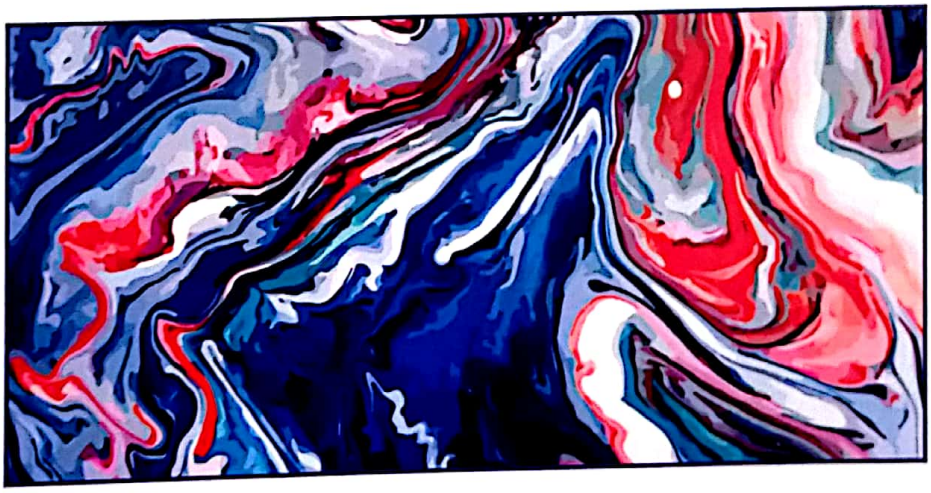

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned with CamScanner

- अयोध्या में ध्वंसलीला : 'आखिरी कलाम' ८९
  डॉ. अमृत बिसन खाडपे
- मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति ९९
  प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
- नारी अस्मिता की पहचान कराता मधुर कपिला का उपन्यास – 'सातवां स्वर' ९५
  डॉ. अभयकुमार आर. खैरनार
- "गिलिगडु : बदलते मानवमूल्यों की कथा" ९७
  डॉ. अशोक शामराव मराठे
- समाज जीवन को उन्नत जीवन प्रदान करने वाली नवचैतन्य की निरंतर धारा – 'सुखदा' ९९
  डॉ. दिपक विश्वासराव पाटील
- "भगवानदास मोरवाल के उपन्यसों में स्त्री–विमर्श" १०२
  प्रा. डॉ. मनोहर हिलाल पाटील
- 'ग्लोबल गाँव के देवता' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १०४
  प्रा. डॉ. प्रमोद गोकुळ पाटील
- 'विजन' उपन्यास में व्यक्त नारी विमर्श १०६
  प्रा. डॉ. पूनम त्रिवेदी
- 'गुनाह बेगुनाह' उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संघर्ष १०८
  प्रा. डॉ. रविंद्र आर. खरे
- "सुरेन्द्र वर्मा के उपन्यासों में नारी चेतना" ('दो मुर्दो के लिए गुलदस्ता' एवं 'मुझे चाँद चाहिए' के विशेष संदर्भ में) १११
  डॉ. संजय प्रल्हाद महाजन
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में चित्रित नारी विमर्श ११३
  प्रा. डॉ. विजय एकनाथ सोनजे
- जीवन की त्रासदी को दर्शाता उपन्यास – 'बेसबब' ११६
  डॉ. अशफ़ाक़ इब्राहिम सिकलगर
- उच्च शिक्षित कामयाब बच्चों के वृध्द माता–पिताओं के मन में 'डर' और 'भय' को व्यक्त करने वाला उपन्यास–"दौड" ११८
  डॉ. गोकुलदास सोनु ठाकरे
- "२१ वीं शताब्दी का हिन्दी उपन्यास साहित्य" १२०
  डॉ. विजय जी. गुरव
- कठगुलाब उपन्यास में नारी चित्रण (मृदुला गर्ग) १२३
  प्रा. शरद शेलार
- २१ वी सदी के महिला उपन्यासों में नारी चेतना १२५
  श्री. आमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ
- 'मरंग गोडा नीलकंठ हुआ' उपन्यास में आदिवासी विमर्श १२७
  डॉ. निंबा लोटन वाल्हे
- नारी वेदना का दस्तावेज 'तिनका तिनके पास' १२८
  डॉ. ईश्वर ठाकुर
- "टूटा हुआ इंद्रधनुष" उपन्यास में पारिवारिक विघटन १३०
  डॉ. आनंद गुलाबराव खरात
- मैत्रेय पुष्पा का उपन्यास गुनाह–बेगुनाह में चित्रित नारी संघर्ष १३३
  प्रा. तुलसा मोची

Scanned with CamScanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 232 : २१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य
ISSN : 2348-7143
February, 2020

मिथिलेश्वर के उपन्यासों में प्रेम एवं काम की अभिव्यक्ति

प्रा. डॉ. प्रल्हाद विजयसिंग पावरा
हिंदी विभागाध्यक्ष,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, यावल, जि. जलगाँव

प्रस्तावना :

प्रेम मानव जीवन में समाहित है। यह एक ऐसी अनुभूति है जिसमें प्रेमी मग्न होकर आनन्दानुभूति का अनुभव करते है। प्रेम में उदात्तता का भाव निहित है। प्रेम सदैव सुखात्मक नहीं होता उसके साथ दु:खात्मक स्थिति भी बनी रहती है जिसे हमारे यहाँ संयोग एवं वियोग कहा गया है। बल्कि दु:खात्मक स्थिति प्रेम को घनीभूत बनाती है। जब यही भावनात्मक प्रेम वासनात्मक रूप लेता है तो उसे कामदशा या काम की स्थिति कहा जाता है। काम मन से देह तक की यात्रा है। काम जीवन का एक आवश्यक अंग है। भारत में काम को शास्त्र माना गया है। वात्सायन का कामसूत्र प्रसिध्द ग्रंथ रहा है। पाश्चात्य विद्वान फ्रायड मानते हैं कि काम मानवीय जीवन की अत्यंत प्रबल भावना है। प्रत्येक मनुष्य में काम एक उर्जा स्रोत के रूप में रहता है। इस परिप्रेक्ष्य में मिथिलेश्वर के उपन्यासों में निहित प्रेम एवं काम का विवेचन प्रस्तुत है।

'झुनिया' उपन्यास में सोमारू एवं झुनिया में प्रेम संबंध है। सोमारू को चांदनी रात में झुनिया बहुत अच्छी लगती है। उसकी आँखों में सदैव झुनिया की आकृति ही तैरती रहती है। उसके शरीर की खुशबू सोमारू को व्याकुल कर देती है। प्रतिदिन शाम गहराते ही वह झुनिया के घर पहुँचता है। घंटेभर तक दोनों बतरस में डूब जाते हैं। उनकी अधिकतर बाते प्रेम से संबंधित होती है। वह झुनिया को अहसास करा देना चाहता है कि वह झुनिया से सच्चा प्रेम करता है। ईर्ष्या प्रेम की कसौटी होने के कारण सोमारू निखिल पर क्रोधित है क्योंकि वह जब तक झुनिया से बातें करने के लिए उत्सुक रहता है। वह झुनिया को स्पष्ट शब्दों में कहता भी है कि उसकी आँखों के सामने कोई उसे आँखे फाड़-फाड़कर देखे तो वह उसे बर्दाश्त नहीं कर पाता है। जब एक शाम सोमारू उससे मिलने नहीं आता है तब वह बेचैन होकर उससे मिलने जाती है। तब वह उसका हाथ अपने हाथ में लेकर कहता है कि अब ऐसा नहीं होगा। अन्य दिनों की भांति वह अपना हाथ सोमारू के हाथ से नहीं खींचती। वह झुनिया का हाथ पकड़े उसे उसके घर तक छोड़ने जाता है। जब वह अपने घर लौटने लगता है तो झुनिया उसे समय तक निहारती रहती है जब तक वह आँखों से ओझल नहीं हो जाता।

इसी उपन्यास में राणा बहादुर सिंह की लड़की विमली और हरनाम के बीच देहिक आकर्षण का उल्लेख हुआ है। जब हरनाम विमली की ओर देखता है तो उसकी आँखों में उसे स्पष्ट रूप से आमंत्रण झलकता है। वह अन्दर से डोल जाता है। अब विमली और हरनाम के आपसी संबंधों की चर्चा दबी आवाज में होने लगी थी। कई लोगों ने उनको रंगे हाथों देख भी लिया था। इस उपन्यास में झुनिया के प्रेम और विमली की वासना की ओर संकेत किया गया है।

'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' उपन्यास के नाम से स्पष्ट होता है कि इसमें प्रेम का विस्तृत एवं गहन चित्रण हुआ है। प्रेम के संबंध में मिथिलेश्वर लिखते है - ''अनेक प्रेम कहानियाँ आपने पढ़ी होंगी। प्रेम को लेकर आपके मन में कोई अच्छी-खासी धारणा भी होगी। लेकिन पिछले कुछ समय से मैं यह समझ नहीं पा रहा हूँ कि प्रेम क्या होता हैं ? पहले आपकी तरह मेरे मन में भी प्रेम का महत्त्व अकाट्य था। प्रेम को मैं शाश्वत, चिरन्तन, दिव्य, अतुलनीय एवं सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण घटक मानता था। लेकिन अपनी दीदी के जीवन की घटनाओं को देखने तथा उन्हें जानने के बाद मैं प्रेम पर नये सिरे से विचार करने के लिए बाध्य हो गया हूँ।''[१] मोना एवं रूपेश सहपाठी हैं। उनमें पारस्परिक आकर्षण एवं प्रेम भावना भी है। रूपेश के पिता शहर के सुप्रसिध्द चिकित्सक है। उसका परिवार उच्च वर्ग का है जबकि मोना मध्यवर्ग से हैं। इसलिए रूपेश के पिता इस प्रेम के विरूध्द है। इसलिए वे मोना के पिता को फटकारतें भी है कि उन्होंने अपनी बेटी को उकसाया हैं। इस पर वे रूपेश के पिता पर प्रत्यारोप करते हैं कि उन्हीं के बेटे ने मोना को प्रेम में फँसाया है। रूपेश और मोना में प्रेम पत्र का आदान-प्रदान होता था। मोना का भाई सुनील पत्र का वाहक होता था जो मोना दीदी के संकोच को लक्ष्य कर उसे कहता था कि सही अर्थों में किया गया सच्चा प्रेम तो सदैव सराहनीय होता है। जिसने प्रेम किया, वह अमर हो गया। प्रेम करने का सौभाग्य सबको प्राप्त नहीं होता।

वे मद्रास से मुंबई और फिर दिल्ली पहुँचे। यहाँ रूपेश विवश होकर एक फैक्टरी में काम करने लगा था। मोना शिक्षिका बन गई। परंतु रूपेश घर काफी देर से लौटता। पता नहीं कहाँ जाता है। मोना सोचती है कि अब इसे प्रेम की याद क्यों नहीं आती हैं ? ''क्या जीवन की भौतिक समस्याएँ प्रेम से बड़ी होती हैं ? क्या प्रेम को वे प्रभावित और विचलित कर देती हैं ? अगर ऐसा होता तो फिर अमर प्रेम-कहानियों के नायक-नायिका कहाँ से आते ? प्रेम को महान और सर्वोपरि क्यों समझा जाता ? प्रेम के नाम पर लोग जीने-मरने के लिए उतारू क्यों हो जाते ? कबीर को 'ढाई आखर' क्यों लिखना पड़ता।''[२]

'यह अंत नहीं' उपन्यास में अगम और चुनिया के प्रेम का रेखांकन हुआ है। अगम श्रवण सिंह का बेटा है, इसी के यहाँ चुनिया काम करती है। गर्मी की छुट्टियों में वह गाँव आया है। चुनिया उसे कमरे में नाश्ता, पानी, शरबत देने जाती है, वे दोनों एक-दूसरे की ओर आकर्षित हो जाते हैं। वह अक्सर चुनिया को साथ में नाश्ता करने का आग्रह करता है परंतु चुनिया टाल जाती है। जब छुट्टियाँ समाप्त होने पर अगम शहर जाने लगा तब रसोई के पल्ले के पास खड़ी चुनिया उसे अपलक निहारती रही। उसका मन हाहाकार करता रहा। अगम की आँखों ने जब उसकी आँखों से इजाजत लेना चाही तो

Scanned with CamScanner

उसकी आँखे डबडबा आई। चुनिया मन ही मन तड़पती रही क्यों कि वह अगम को भर नजर देख भी न सकी। उसकी प्रेम भावना इन शब्दों में व्यक्त हुई है – ''अगम चला गया। संभव है, शहर जाकर अपनी पढ़ाई में लग गया हो। लेकिन चुनिया को तो बेचैनी दे गया। अगम के बंद कमरे की ओर नजर जाती तो उसके कलेजे में हूक जैसी उठती। उसका मन सदैव उड़ा-उड़ा रहने लगा। खाने-पीने की उसकी इच्छा जाती रही। वह अपने मन को समझाती कि आखिर अगम उसका है कौन...? मालिक के लड़के से यह कैसी प्रीत....? यह तो पत्थर पर दूब उगाना है। पर उसका भोला मन था कि कुछ भी सुनने को तैयार नहीं था।''[३]

अगम शहर जाने के बाद फिर शनिवार को आता और सोमवार को चला जाता। इस बार वह उसे बाँहों में भर लेने के लिए उतावला बन गया। परंतु चुनिया छटककर दूर हो गयी और चुनिया उसे कहती कि – 'जब हमसे इतना पीरित है तो बिआह काहे नहीं रचा लेते हमसे।' वह कहता समय आने पर वह भी कर लेंगे, बस एक बार वह उसकी बाहों में आ जाये। चुनिया का एक ही उत्तर होता – 'वह सब बिआह के बाद।' अगम चुनिया को फुसलाने के लिए जब भी शहर से आता उसके लिए स्नो, पाउडर, रूमाल, पर्स, झुमका आदि वस्तुएँ लेकर आता परंतु चुनिया का कहना था कि जब घरवाले पूछेंगे कि यह वस्तुएँ कहा से आयी ? तब वह क्या जवाब देगी। ये सब वस्तुएँ अपने पास रखो, ब्याह पर देना। तब वह प्रेम से लेगी और शान से पहिनूँगी। दशहेर की लंबी छुट्टियों में अगम डेढ़ महीने के लिए आया। अब वह चुनिया के पीछे पड़ गया। वह जैसे ही सामने आती, भूखे भेड़िए की तरह उसे दबोच लेने के लिए कुलाँच मारता परंतु चुनिया सतर्क होकर भाग जाती। जब उसने जोर-जबर्दस्ती करने का प्रयास किया तब चुनिया अत्यंत क्रोधित हुई और यहीं उनके प्रेम का अंत हो गया।

चुनिया का विवाह जोखन से हो गया। जोखन के मन में चुनिया को पास लेने की इच्छा हुई परंतु उसने आज पूजा का दिन है कहकर लाचारी व्यक्त की। परंतु काम भावना तो चुनिया में भी उठ रही थी। अतः उसने जोखन के पीठ में हलकी चिकोटी काटी। एकाएक जोखन का पूरा शरीर रोमांचित हो गया। काम का आवेग ने दोनों को देहिक संबंध के लिए प्रेरित किया। वे दोनों एकाकार हो गये। दोनों के बीच तन की नहीं मन-प्राणों की समस्त दुरियाँ मिट गयी।

कालान्तर में जोखन का अपहरण होता है और जब चुनिया उसे छुड़ाकर लाती है तब दोनों के मन में काम-भावना जागृत होती है – ''चुनिया का हाथ पकड़ अपने होंठों से लगा उसे अपनी संपूर्ण इच्छाशक्ति के साथ चूम लिया। उसके इस चूमने से चुनिया ने भी ऐसा महसूस किया कि उसकी भागदौड़ और कष्ट-भटकन की रही-सही व्यथा भी छूमंतर हो गई। जैसे सँपकटी वाली जगह मुँह सटा कोई सपेरा पूरा विष खींच ले, उसने जोखन के चुंबन में वैसा ही चमत्कार पाया।''[४]

संपूर्ण उपन्यास में केवल चुनिया और जोखन के माध्यम से प्रेम और काम की अभिव्यक्ति हुई है। उसका कारण यह है कि इन दोनों को केन्द्र में रखकर कथ्य का ताना-बाना बुना गया है।

'सुरंग में सुबह' उपन्यास में प्रेम की अपेक्षा काम का निरूपण अधिक हुआ है और विशेष बात यह है कि इस उपन्यास की नारियाँ परंपरागत मिथक को झुठलाते हुए प्रेम एवं काम में पुरूष की अपेक्षा प्रथम पहल करती है। राव मानवेन्द्र राय के यहाँ आश्रित जनार्दन युवा है। वह उनकी लड़की नन्दिता कभी-कभी उसे पढ़ाती है। पढ़ाते वक्त वह स्नेह जताते हुए उसके गाल पर हल्की चपत लगाती तो कभी उसकी बाँह पकड़ लेती, उससे सटकर बैठती और कभी हँसते हुए उसके देह पर गिर जाती। नन्दिता का यह व्यवहार उसमें उम्र के साथ बढ़ते काम का परिणाम है। जनार्दन गजब का सुंदर एवं आकर्षक है। नन्दिता की एक सहेली तो एकान्त पाते ही उसे बाँहों में भर लेती और उसके गालों का चूमते हुए कहती – 'तू बड़ा प्यारा है रे...बड़ा अच्छा।' इस पर जनार्दन अपने देह में एक अजीब तरह की सुरसुरी का अनुभव करता।

नन्दिता उसे लूडो खेलने के बहाने अपने पास पलंग पर बिठा लेती। जनार्दन को नन्दिता की समीपता एवं बढ़ती आत्मीयता ने प्रकृतिस्थ नहीं रहने दिया। नन्दिता ने उसके भीतर प्रबल खुमारी पैदा कर दी थी। वह लूडो में अक्सर हार जाता हैं परंतु आज वह जीत गया। उसे लगा जरूर नन्दिता ने अपनी चाल बिगाड़कर उसे विजयी बनाया है। नन्दिता ने खुश होकर जनार्दन को चूम लिया। पहले चुम्बन जीत के लिए था, दूसरा पिताजी की जान बचायी के लिए था, तीसरा उसे जनार्दन अच्छा लगता है, इसलिए था। जनार्दन उत्तेजित हुआ और उसने भी नन्दिता को बाहों में भरकर उतप्त चुम्बनों की वर्षा कर दी। इसी क्षण नन्दिता ने भी उत्तेजित होकर उससे कहा कि – 'पहले दरवाजा बन्द कर दो जनार्दन...।'

इसी प्रकार नन्दिता अपने प्रोफेसर बनर्जी के प्रति आसक्त थी हालाकि वे उससे उम्र में काफी बड़े थे। दूसरे कमरे में बैठा जनार्दन अनुभव कर रहा था कि नन्दिता के स्टडी रूम से दोनों की खिलखिलाहट आ रही है। अचानक नन्दिता की मधुर आवाज उसे सुनाई दी – 'पहले दरवाजा बन्द कर लीजिए सर... ।' जनार्दन ने आवेश में जब नन्दिता से पूछा कि प्रोफेसर बनर्जी ने स्टडी रूम का दरवाजा क्यों बंद किया था ? तब उसने विफरते हुए कहा कि वह पूछनेवाला कौन होता है। परंतु बाद में नन्दिता ने जर्नादन से क्षमा याचना की। उसने यह अनुभव किया कि यह नेताजी की पुत्री अपने रूप और जवानी को अपना अमोघ अस्त्र मानती है। पिता के खेल का मैदान राजनीति है तो पुत्री के खेल का मैदान देहिक संबंधों का अखाडा। दोनों ही दाँव-पेंच में माहिर और उस्ताद है। राव मानवेन्द्र बाबू राजनीति के खिलाड़ी होने के नाते विरोधी पक्ष के नेता आर. अण्डमान को अपने पक्ष में करने के लिए घर पर आमंत्रित करते हैं। इसके लिए नन्दिता एक साहित्यिक गोष्टी का आयोजन करती है जिसमें आर. अण्डमान को प्रमुख अतिथि बनाया जाता है। गोष्टी समापन हो जाने पर वह और कविता सुनाने के लिए उन्हें अपने कमरे में ले जाती है। थोडी देर बाद वे दोनों देहिक संबंध के लिए उतावले हो गये। तभी जनार्दन को नन्दिता की मधुर आवाज सुनाई दी – 'पहले दरवाजा बन्द कर लीजिए अंकल.... ।' इन प्रसंगों से सिध्द होता है कि नन्दिता अपने देहिक संबंधों के लिए कितनी आतुर है।

Scanned with CamScanner

नन्दिता ने जनार्दन को जब लूडो खेलने के लिए बुलाया तो वह तटस्थ बना रहा। वह बेमन से लूडो खेलता रहा। आज भी नन्दिता ने उसे जिताया और फिर नन्दिता ने चुम्बनों की झड़ी लगा दी। परंतु वह नन्दिता से नाराज होने के कारण उसकी मादक और उत्तेजक हरकत पर भी तटस्थ बना रहा। उसने बौखला कर जनार्दन को झिंझोडते हुए पूछा कि उसे आज क्या हो गया है।

कालान्तर में जनार्दन राजनीति में पार्टी पोलिटिक्स करने लगा। यहाँ उसकी भेट अंजलि से हुई। उसने जनार्दन को अपने सम्मोहन के कटघरे में बाँध लिया था। अंजलि के मधुर आवेग का उफान भरा आमंत्रण पाकर जनार्दन की इच्छा हुई कि वह अपनी पार्टी की सारी नैतिकता को भूलकर अंजलि की भावनाओं को मूर्त कर दे। परंतु वह एक अनुभव ले चुका था जब वह नन्दिता के यहाँ उम्र के भटकाव में खो गया था। इसलिए उसने अपने आपको संयत किया। जब उनकी पार्टी ने रैली आयोजित की और इस रैली पर पुलिस की ओर से लाठी चार्ज हुआ तब भागदौड मच गयी। जनार्दन अंजलि को खोजने लगा। उसके मन में अंजलि के संबंध में तरह-तरह की आशंका उत्पन्न हुई परंतु अचानक भीड़ में अंजलि उसे दिखाई दी। जब वह उसके पास पहुँचा तब वह सुखद विकलता में जनार्दन से लिपट गयी। जनार्दन की इच्छा हुई कि लिपटी अंजलि को बाँहों में भर ले। परंतु अंजलि का पूरा जिस्म काँप रहा था। वह पूर्ववत उसे जकड़े रही। अंजलि के युवा नारी देह स्पर्श से जनार्दन की थकान क्षणभर में गायब हो गयी।

प्रस्तुत उपन्यास में प्रेम भावना का चित्रण न होकर काम भावना ही व्यक्त हुई है। नन्दिता और बाद में अंजलि जनार्दन के प्रति आसक्त है परंतु नन्दिता में कामासक्ति अधिक है। वह अधिक योनाकांक्षी है इसलिए जनार्दन, प्रो. बनर्जी एवं आर. अण्डमान के साथ देहिक संबंध बनाती है।

'माटी कहे कुम्हार से' उपन्यास में भी प्रेम भावना एवं काम का चित्रण हुआ है। कलावती जन्मजात गूँगी थी परंतु रंग-रूप में एकदम खिली हुई फूल थी। जलती हुई दिपशिखा गूँगी होने के कारण विवाह नहीं हो रहा था। बिसुनदेव उनके यहाँ दूध देने आता था, साथ ही घर में अन्य काम कर दिया करता था। इसी दौरान कलावती और बिसुनदेव को निकट आने का अवसर मिला। एकान्त पाते ही कलावती चुपके से बिसुनदेव की खटाल में पहुँचती या रात में बिसुनदेव चुपचाप उसके कमरे में आ जाता है। इन दोनों के प्रेम एवं काम की भनक किसी को नहीं लगी। परंतु जब कलावती गर्भवती हुई तो बवाल मच गया । अतएव दोनों भाग गये। यथासमय कलावती ने एक कन्या को जन्म दिया जिसका नाम मुन्नी रखा गया। यही मुन्नी बड़ी हुई और संयोग से उसकी भेट मुनीलाल से हुई। दोनों में पारस्परिक प्रेम भावना बढ़ने लगी। मुनीलाल को जमीन के बँटवारे को लेकर उसके चाचा एवं चचेरे भाई मारने के लिए उतावले थे अतएव वह छिपकर ही रहता था परंतु अवसर मिलते ही मुन्नी को मिलने आता था। आते समय वे एक बार मुन्नी के लिए फल, मिठाइयाँ और साड़ी लेकर आया। एक बार गांगी नदी में बाढ आयी। जो तबाही मचाकर चली गयी परंतु गंदगी फेलने से महामारी फैल गयी। मुन्नी इसी बीमारी की चपेट में आयी तब उसे मुनीलाल की याद हो आयी। अचानक मुनीलाल का चेहरा उसकी आँखों में कौंधने लगा। पीड़ा से छटपटाती मुन्नी को सारी रात ऐसा लगता कि मुनीलाल आया है। पर कोई नजर नहीं आता। अपने इस भ्रम पर ग्लानि और उदासी से भर जाती है। यथार्थ में वह मुनीलाल से प्रेम करने लगी है। जब मुनीलाल आता है उससे प्रश्न करता है कि - 'अब तू सच-सच बता, क्या मुझे खोज रही थी ?' तब नारी सुलभ लज्जा से उसका चेहरा लाल हो जाता है। वह केवल सिर हलाकर 'हाँ' की सूचना देती है। मुन्नी अब लगभग स्वस्थ हो गयी, वे अस्पताल में एक-दूसरे को स्नेह से निहारते रहे। मुनीलाल के प्रति अपने अंदर छलक उठे अपनेपन को मुन्नी अब न रोक सकी और कहने लगी - 'इहाँ तू हमारे वास्ते परेशान हो, ऊहाँ तोहरे घर के लागे तुझे खोज रहे होंगे।' मुनीलाल अपने प्रेम का इजहार करता हुआ कहता है कि उसकी उम्र मुन्नी से कुछ ज्यादा ही है। परंतु उसका मन मुन्नी पर आ गया है। यदि वह उससे नाता जोड़ना चाहती हो तो वह तैयार है। इस पर वह बोली कि 'तुमसे नाता जोडूँगी... । मेरा धन भाग, तुमने हमको अपने जोग समझा।' इसके पश्चात मुनीलाल ने मुन्नी को बाँहों में भरते हुए कहा कि - ''तू जानती है मैं तुझे क्यों चाहता हूँ ? तू एकदम मेरी पहली पत्नी जैसी है। हू-ब-हू उसी की माफिक...! वही तांबई रंग। वही कदकाठी। वही गोल सुघड़ मुखड़ा। तुझे पहली मरतबा देखकर मैं चिहा गया था कि मेरी मर चुकी पत्नी इस झोपड़पट्टी में कैसे आ गयी ? उसी दिन सोच लिया था कि तुझे अपनाऊँगा... । इसी वास्ते तेरा इलाज कराया। तुझे दुबारा अब मरने देना नहीं चाहता।''[५]

अब वे दोनों पति-पत्नी बन चुके थे। मुन्नी का नाम मुनिला हो गया। वे अब अपने प्रथम प्रणय का खाना साथ-साथ ले रहे थे। दोनों के एक दूसरे को निवाला खिला दिया। तत्पश्चात उसने मुन्नी को अपने आगोश में भींच लिया। ''इससे पहले कि मुन्नी के होठ खुलें उसके होंठों को मुनीलाल ने अपने होंठों में दबा लिया। उसे लगा, पहला पहल उसन किया था, जवाब में यह दूसरा पहल उसकी मुन्नी की ओर से हुआ है। बस, अब क्या था ? पहले पहल का रहा-सहा कसर भी उसने पूरा कर दिया। एक-दूसरे से गुँथे लिपटे वे देर तक एक-दूसरे को आत्मसात करते रहे... ।''[६]

अब वे दोनों झाबुआ में रहने लगे। यहीं उनकी भेट शरद और पवन नामक युवा नेताओं से हुई जिनके यहाँ मुन्नी खाना बनाने लगी थी। यहाँ मुखिया की पुत्री जुही और युवा नेता शरद के प्रेम की चर्चा होने लगी। कुछ लोगों के अनुसार शरद ने जुही को बहका लिया है और जुही उसकी बातों में आ गयी है। इसी बीच शरद के साथी पवन का प्रेम संबंध पलटन सिंह की बेटी कमली से हो गया था। वह पलटन सिंह के दूर के रिश्ते में उनका संबंधी लगता था और इस कारण उनके यहाँ आना-जाना था। शरद और मुन्नी के देहिक संबंधों को मुनीलाल जानता था उसने उन्हें एक दूसरे में आलिंगनबध्द देखा भी था।

मुनीलाल एवं मुन्नी के जीवन में एक त्रासदी हुई। मुनीलाल की हत्या होती है। अतएव मुन्नी (मुनिला) को सुमेर सिंह के यहाँ काम मिलता है। अब उसका जीवन एक निश्चित ढंग से चल रहा है। सुमेरसिंह के बेटे शहरों में रहते है वे शिवबचन नौकर के साथ रहते है अब मुनिला उनके घर का काम संभाल रही है कि अचानक वह बीमार

Printed by : PRASHANT PUBLICATIONS

Scanned with CamScanner

हो जाती है। बाहर बारिश तेज है। शीत के कारण वह भयंकर रूप से काँपने लगती है। सुमेरसिंह उसे कम्बल ओढाते है फिर भी कँपकँपाहट कम नहीं होती। वे गर्मी देने के लिए उसे बाँहों में भर लेते हैं। मुनिला भी कोई प्रतिकार नहीं करती क्योंकि वह तो ठंड से बचने के लिए बेहाल थी और उनके बदन लिपटती जा रही थी। मानुस देह की गर्मी से जल्द ही कँपकँपाहट कम होती चली गयी। जब चेतना सामान्य हुई तब उसने अपने बदन को सुमेर सिंह के बदन से पति-पत्नी की तरह गुँथा हुआ पाया। सुमेरसिंह ने इतना ही कहा कि कल तक उनके संबंध नौकरानी और मालिक के थे आज से पति-पत्नी के हो गये। वह अपने को भाग्यशाली मानने लगी कि सुमेरसिंह उसे अपना जीवनसाथी बना रहे हैं। उनके चौड़े सीने में उसने अपना माथा सटा लिया। वे भी उसे बाँहों में समेटते हुए कहने लगे कि 'अकेले का जीवन कोई जीवन नहीं होता मुनिला। तू भी अकेली थी। मैं भी अकेला था... ।' अब देखना हमारा जीवन कैसे बढ़िया से गुजरेगा। उन्होंने यह भी कहा कि वे उनके मन की बात मुनिला से कहने के लिए अवसर की प्रतीक्षा में थे। लेकिन प्रकृति ने स्वत: उन्हें एक-दूसरे से जोड़ दिया है। प्रकृति अर्न्तयामी होती है। इसके बाद मुनिला अपने आपको रोक न सकी। किसी बहती हुई नदी की तरह उनसे लिपट गयी। यही उद्दाम आदेश सुमेरसिंह में था। ''मुनिला भी अब क्यों बरजने (मना करना) वाली थी ? सुमेर सिंह के प्यार में तो वह स्वयं बाँध तोड़कर बहनेवाली उफनती नदी बन गयी थी ? दोनों अनुभवी थे, लेकिन लम्बे समय से वंचित थे, इसीलिए जब खुलकर मिले तो देर तक एक-दूसरे में गुत्थम-गुत्थी होते रहे।''[७]

सुमेरसिंह को अकेले रहने की पीड़ा सता रही थी। वे जानते थे कि हर परिवार में बुजुर्गों की यही स्थिति है परंतु उनके जीवन के अकेलेपन से मुनिला ने उनको उभार लिया। मुनिला ने भी झोपडपट्टी में अपने जनमने, मुनीलाल से शादी, झाबुआ आने और मुनीलाल की हत्या तक की सारी दास्तान सुमेर सिंह को बतायी। सुमेरसिंह ने उसे आश्वस्त करते हुए कहा कि वास्तव में उनके दुख से उसका दुख अधिक है। लेकिन अब वह घर की मालकीन और उनके जीवन की रानी है और उन्होंने उसे आलिंगन में ले लिया। मुनिला ने भी कहा कि 'अब तो हमारे जान-प्राण आप ही हैं।' इस पर ''सुमेरसिंह ने भी उसे आलिंगन में कसकर अपने सीने पर चढ़ा लिया। अब दोनों के चेहरे एक-दूसरे पर थे तथा मुनिला के स्तनों के मांसल उभार का मधुर दबाव सुमेर सिंह की छातियों पर था। नर-मादा के सघन स्पर्श ने अब उन्हें फिर उत्तेजित करना शुरू कर दिया। बस, वे फिर एक-दूसरे में खोते चले गये....।''[८]

इस प्रकार 'माटी कहे कुम्हार से' उपन्यास में नायिका मुन्नी उर्फ मुनिला एवं मुनीलाल व तत्पश्चात मुनिला एवं सुमेर सिंह ने पारस्परिक प्रेम, आकर्षण एवं काम वासना का विस्तृत चित्रण हुआ है। अत: हम कह सकते है कि मिथिलेवर के उपन्यासों में प्रेम तथा काम की अभिव्यक्ति हुई है।

संदर्भ ग्रंथ :

१) प्रेम न बाडी ऊपजै - मिथिलेश्वर, पृ. १७
२) पूर्ववत् - पृ. ११६
३) यह अंत नहीं -मिथिलेश्वर, पृ. २९
४) यह अंत नहीं -मिथिलेश्वर, पृ. ३८७
५) माटी कहे कुम्हार से - मिथिलेश्वर, पृ. ५३
६) पूर्ववत् - पृ. ५७
७) पूर्ववत् - पृ. २३८
८) पूर्ववत् - पृ. २५८

Scanned with CamScanner